• व्रत...

सीता नवमी

वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को सीता नवमी मनाई जाती है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार माता सीता इसी दिन धरती से प्रकट हुई थीं। इसीलिए इस दिन को सीता जयंती या सीता नवमी के रूप में मनाते हैं। इसको जानकी नवमी के नाम से भी जाना जाता है। सीता नवमी पर विशेष रूप से माता सीता की उपासना करने से व्यक्ति को विशेष लाभ मिलता है। साथ ही जीवन में आ रही सभी समस्याएं दूर हो जाती हैं। मान्यता है इस दिन मां सीता की विधि विधान से पूजा करने पर आर्थिक तंगी दूर होती है और मां लक्ष्मी का आशीर्वाद प्राप्त होता है। आइए जानते हैं सीता नवमी की तिथि, मुहूर्त , महत्व और कथा।

▶ **वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि का आरंभ :** 16 मई ,गुरुवार, प्रात: 6:22 से
वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि का समाप्त : 17 मई, शुक्रवार, प्रात: 08:48
सीता नवमी का शुभ मुहूर्त
सीता नवमी का मध्याह्न मुहूर्त : प्रात:11.04 से दोपहर 01:43 तक सीता नवमी का मध्यान क्षण 12: 23 तक है।

▶ सीता नवमी का दिन राम नवमी की तरह ही शुभ माना जाता

है। धार्मिक मान्यता है कि इस दिन जो राम-सीता का विधि विधान से पूजन करता है, उसे 16 महान दानों का फल, पृथ्वी दान का फल तथा समस्त तीर्थों के दर्शन का फल मिल जाता है। वैवाहिक जीवन में सुख-समृद्धि पाने के लिए सीता नवमी का श्रेष्ठ माना गया है। सीता नवमी के दिन माता सीता को शृंगार की सभी सामग्री अर्पित की जाती हैं। साथ ही इस दिन सुहागिनें व्रत रखकर अखंड सौभाग्य की कामना करती हैं।

▶ वाल्मिकी रामायण के अनुसार एक बार मिथिला में भयंकर सूखा पड़ा था जिस वजह से राजा जनक बेहद परेशान हो गए थे। इस समस्या से छुटकारा पाने के लिए उन्हें एक ऋषि ने यज्ञ करने और खुद धरती पर हल चलाने का सुझाव दिया। राजा जनक ने अपनी प्रजा के लिए यज्ञ करवाया और फिर धरती पर हल चलाने लगे। तभी उनका हल धरती के अंदर किसी वस्तु से टकराया। मिट्टी हटाने पर उन्हें वहां सोने की डलिया में मिट्टी में लिपटी एक सुंदर कन्या मिली। जैसे ही राजा जनक सीता जी को अपने हाथ से उठाया, वैसे ही तेज बारिश शुरू हो गई। राजा जनक ने उस कन्या का नाम सीता रखा और उसे अपनी पुत्री के रूप में स्वीकार किया।

• साधना...

मां बगलामुखी की पूजा

शक्ति की साधना में मां बगलामुखी की पूजा का बहुत ज्यादा महत्व माना गया है। हिंदू धर्म में इन्हें तंत्र की देवी के रूप में पूजा जाता है। मान्यता है कि मां बगलामुखी की विधि-विधान से पूजा करने पर साधक की बड़ी से बड़ी मनोकामना जल्द ही पूरी होती है और उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय मिलती है। इस साल 15 मई 2024 को बगलामुखी जयंती मनाई जाएगी। माता बगलामुखी की साधना-आराधना के लिए यह दिन बेहद शुभ और फलदायी माना गया है। आइए मां बगलामुखी माता की पूजा से जुड़े उन उपायों के बारे में जानते हैं, जिसे करते ही सुख-समृद्धि वरदान मिलता है।

▶▶ यदि आप चाहते हैं कि आपकी बगलामुखी साधना शीघ्र ही सफल और शुभ साबित हो तो आपको देवी की पूजा के करते समय हमेशा पीले रंग कपड़े पहनकर बैठने के लिए पीले रंग का ऊनी आसन इस्तेमाल करना चाहिए।

▶▶ माता बगलामुखी की पूजा में पीले रंग का बहुत ज्यादा महत्व माना गया है। ऐसे में मां बगलामुखी की पूजा में न सिर्फ पीले पुष्प और हल्दी की गांठ विशेष रूप से चढ़ाना चाहिए, बल्कि उनके मंत्र का जप करने के लिए हल्दी की ही माला का प्रयोग करना चाहिए।

▶▶ मां बगलामुखी का आशीर्वाद पाने के लिए बगलामुखी जयंती वाले दिन किसी योग्य पंडित के जरिए बगलामुखी यंत्र को विधि-विधान से स्थापित कराना चाहिए और उसके बाद प्रतिदिन उसकी पूजा करनी चाहिए। हिंदू मान्यता के अनुसार जिस स्थान पर मां बगलामुखी यंत्र की पूजा होती है, वहां पर भूलकर भी नकारात्मक शक्तियों का प्रवेश नहीं हो पाता है। देवी की कृपा से वहां पर हमेशा सुख-सौभाग्य कायम रहता है।

▶▶ बगलामुखी जयंती के दिन माता से मनचाहा आशीर्वाद पाने के लिए उनके किसी भी पावन धाम पर जाकर उनका दर्शन और पूजन करना चाहिए। मां बगलामुखी के प्रसिद्ध मंदिरों में मध्य प्रदेश के दतिया स्थित मां पीतांबरा का मंदिर, खरगोन का नवग्रह मंदिर, छत्तीसगढ़ में मां बमलेश्वरी माता का मंदिर, कांगड़ा में वनखंडी मंदिर, आदि हैं।

▶▶ बगलामुखी जयंती पर माता बगुलामुखी से मनचाहा वरदान पाने के लिए पूरी श्रद्धा एवं विश्वास के साथ बगलामुखी कवच का पाठ करना चाहिए। माता की साधना का शीघ्र ही शुभ फल पाने के लिए उनकी पूजा हमेशा सुबह या फिर शाम या फिर आधी रात के समय करनी चाहिए।

गंगा सप्तमी

धार्मिक मान्यता है कि गंगा सप्तमी के दिन ब्रह्मा जी के कमंडल से गंगा जी निकली थी। इसलिए इस दिन को गंगा सप्तमी के नाम से जाना जाता है। इस दिन गंगाजल से जुड़े कुछ उपाय व्यक्ति को परेशानियों और कष्टों से छुटकारा दिलाते हैं।

हिंदू पंचांग के अनुसार वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि की शुरुआत 13 मई शाम 05 बजकर 20 मिनट पर होने जा रही है और इसका समापन 14 मई शाम 6 बजकर 49 मिनट पर होगा...

सनातन धर्म में हर तिथि का अपना अलग महत्व है। वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि का दिन भी हिंदू धर्म में विशेष महत्व रखता है। दरअसल इस दिन गंगा सप्तमी मनाई जाती है।

हिंदू पंचांग के अनुसार इस बार गंगा सप्तमी 14 मई 2024 के दिन पड़ रही है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस दिन गंगा मां की पूजा का विधान है। कहते हैं कि इस दिन मां गंगा की पूजा करने और गंगा जी में स्नान करने से व्यक्ति को पापों से मुक्ति मिलती है।

धार्मिक मान्यता है कि गंगा सप्तमी के दिन ब्रह्मा जी के कमंडल से गंगा जी निकली थी। इसलिए इस दिन को गंगा सप्तमी के नाम से जाना जाता है। इस दिन गंगाजल से जुड़े कुछ उपाय व्यक्ति को परेशानियों और कष्टों से छुटकारा दिलाते हैं।

हिंदू पंचांग के अनुसार वैशाख माह के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि की शुरुआत 13 मई शाम 05 बजकर 20 मिनट पर होने जा रही है और इसका समापन 14 मई शाम 6 बजकर 49 मिनट पर होगा। उदयातिथि के अनुसार 14 मई को गंगा सप्तमी का पर्व मनाया जाएगा।

हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार, देवी गंगा पहली बार गंगा दशहरा के दिन धरती पर उतरी थीं, लेकिन ऋषि जह्नु ने सारा गंगा जल पी लिया। तब सभी देवताओं और भागीरथ ने ऋषि जह्नु से गंगा को छोड़ने का अनुरोध किया। इसके बाद गंगा सप्तमी के दिन देवी गंगा फिर से धरती पर आईं और इसीलिए इस दिन को जह्नु सप्तमी भी कहा जाता है।

गंगा सप्तमी से जुड़ी एक और कहानी है, एक बार, कोसल के राजा भागीरथ परेशान थे, क्योंकि उनके पूर्वज बुरे कर्मों के पापों से पीड़ित थे। भागीरथ चाहते थे कि वे इससे मुक्त हों, इसलिए उन्होंने भगवान ब्रह्मा की कठोर तपस्या की और भगवान ब्रह्मा ने उन्हें आश्वासन दिया कि गंगा पृथ्वी पर आएंगी, उनके पूर्वजों की आत्मा को शुद्ध करेंगी। लेकिन वह जानते थे कि देवी गंगा का प्रवाह सब कुछ नष्ट कर सकता है, तब ब्रह्मा जी ने भागीरथ को भगवान शिव की पूजा करने के लिए कहा क्योंकि वे ही गंगा के प्रवाह को नियंत्रित कर सकते हैं। इसलिए उन्होंने अपनी कठोर तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न किया और इस शुभ दिन देवी गंगा पृथ्वी पर उतरीं, इसलिए गंगा को भागीरथी के नाम से जाना जाता है।

गंगा जी में न डालें ये चीजें

- ज्योतिष शास्त्र के अनुसार गंगा सप्तमी पर गंगा जी में अस्थियां डालने से बचें।
- वहीं, इस दिन गंगा जी में पुराने वस्त्र आदि भी न डालें।
- गंगा जी में शैंपू, साबुन आदि डालने से भी परहेज करें।
- गंगा सप्तमी के दिन पहले की रखी हवन सामग्री या फिर पूजा की सामग्री डालने से भी बचें।
- गंगा सप्तमी पर गंगा जी की पवित्रता का खास ख्याल रखने पर हीमां गंगा का आशीर्वाद प्राप्त होता है।
- अगर आप गंगा सप्तमी पर गंगा जी में स्नान कर रहे हैं, तो इस दिन स्नान करते समय मां गंगा का ध्यान करें।
- गंगा सप्तमी के दिन गंगा जी में अशुद्ध चीजें भूलकर न डालें।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

• आभार...

भगवान का भोग

हिंदू धर्म में ईश्वर का आभार प्रकट करने के लिए पूजा-पाठ को एक अच्छा माध्यम माना जाता है। सनातन धर्म में माना गया है कि नियमित रूप से पूजा-पाठ करने से ईश्वर की कृपा से घर-परिवार में सुख-समृद्धि का माहौल बना रहता है। ध्यान रखें कि न तो भोग को तुरंत हटाएं और न ही ज्यादा देर तक मंदिर में रखे रहने दें। पूजा के बाद आप 5 मिनट के लिए भोग को भगवान के पास रखें और इसके बाद इसे हटा लें। माना जाता है कि यदि आप भोग लगाने के थोड़ी देर बाद उसे मंदिर से नहीं हटाते, तो इससे नकारात्मकता व्याप्त हो सकती है। भोग लगने के बाद प्रसाद को जितने लोगों में संभव हो उतने लोगों में बांटना चाहिए और खुद भी ग्रहण करना चाहिए। ऐसा करने से व्यक्ति को इसका पूर्ण फल प्राप्त होता है। इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखें कि भोग हमेशा सात्विक और स्वच्छ तरीके से बना हुआ होना चाहिए। वहीं, अगर आप देवी-देवताओं को उनका प्रिय भोग अर्पित करते हैं, तो इससे आपकी मनोकामना जल्द पूर्ण होती है।

• तुलसी चालीसा...

गुरुवार के दिन जगत के पालनहार भगवान विष्णु की पूजा की जाती है। इस दिन विवाहित और अविवाहित महिलाएं भगवान विष्णु के निमित्त गुरुवार का व्रत रखती हैं। इस व्रत के पुण्य-प्रताप से साधक को मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। ज्योतिष भी कुंडली में गुरु ग्रह मजबूत करने की सलाह देते हैं। अगर आप भी मनचाहा वर पाना चाहते हैं, तो गुरुवार के दिन पूजा के समय इस तुलसी चालीसा का पाठ करें।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित